कामायनी : जय शंकर प्रसाद

डॉ आशा मीणा
सहायक आचार्य, हिंदी विभाग
मानविकी एवं भाषा संकाय
महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय
मोतिहारी, बिहार
Email: ashameena@mgcub.ac.in

कामायनी : जय शंकर प्रसाद

- जय शंकर प्रसाद का सामान्य परिचय
- कृतियाँ
- कामायनी की कथा वस्तु
- कला पक्ष
- भाव पक्ष
- निष्कर्ष
- संदर्भ

जय शंकर प्रसाद का सामान्य परिचय-

- जन्म – 30 जनवरी 1889 – 15 नवंबर 1937 वाराणसी , उत्तर प्रदेश
- जय शंकर प्रसाद हिन्दी के छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों मे से एक महत्वपूर्ण स्तंभ है ।
- उन्होंने कविता ,कहानी ,नाटक , उपन्यास ,आलोचना , निबंध आदि विधाओं को अपनी लेखनी से समृद्ध किया।

- नाटक लेखन में भारतेन्दु के बाद वे एक अलग धारा बहाने वाले नाटक कार रहे हैं ।

- प्रांरम्भिक रचनाएँ ब्रज भाषा में लिखी गयी किन्तु बाद में वे खड़ी बोली में रचनाएँ करने लगे।

कृतियाँ –

1. कविता –

- कानन कुसुम
- महाराणा का महत्त्व
- झरना
- आँसू
- लहर
- कामायनी
- प्रेम पथिक

- 1914 ई. में उनकी सर्वप्रथम छायावादी रचना ‘खोलो द्वार’ इन्दु पत्रिका में प्रकाशित हुई ।
- काव्य क्षेत्र में प्रसाद की कीर्ति का मूलाधार ‘कामायनी’ हैं जो खड़ी बोली में लिखी गई रचना है ।
- सुमित्रा नन्दन पंत ‘कामायनी’ को ‘ताज महल’ के समान मानती हैं

2. कहानी –

- छाया
- प्रतिध्वनि
- आकाशदीप
- आँधी
- इन्द्रजाल

- 1912 ई. में इन्दु पत्रिका में प्रथम कहानी ‘ग्राम’ प्रकाशित हुई ।
- उन्होंने कुल मिलकर 72 कहानियाँ लिखी ।

3. उपन्यास

- कंकाल
- तितली
- इरावती
- ‘कंकाल’ उपन्यास मे नागरिक सभ्यता के अंतर को यथार्थ रूप में उद्‌घाटित किया गया है ।
- ‘तितली’ ग्रामीण जीवन पर आधारित उपन्यास है ।
- ‘इरावती’ ऐतिहासिक पृष्टभूमि पर लिखा गया अधूरा उपन्यास है ।

4. नाटक –

- स्कंदगुप्त
- चन्द्रगुप्त
- ध्रुवस्वामिनी
- जन्मेयजय का नाग यज्ञ
- राज्य श्री
- कामना
- एक घूंट
- प्रसाद ने 8 ऐतिहासिक, 3 पौराणिक और 2 भावात्मक कुल मिलाकर 13 नाटकों की रचना की है ।

4. निबंध –

- काव्यकला एवं अन्य निबंध

5. पुरस्कार –

जय शंकर प्रसाद को ‘ कामायनी’ पर मंगला प्रसाद पारितोषित प्राप्त हुआ था ।

कामायनी की विषय वस्तु –

- कामायनी की कथावस्तु को 15 सर्गों में बुना गया है ।
- जय शंकर प्रसाद 'कामायनी' के संदर्भ में कहते है कि-

"यह आख्यान इतना प्राचीन है कि इतिहास में रूपक का भी अद्भूत मिश्रण हो गया है । इसलिए मनु , श्रद्धा और इड़ा आदि अपना ऐतिहासिक अस्तित्व रखते हुए सांकेतिक अर्थ की भी अभिव्यक्ति करे तो मुझे कोई आपत्ति नहीं । मनु अर्थात् मन के दोनों पक्ष मस्तिष्क और हृदय पक्ष का संबंध क्रमश : श्रद्धा और इड़ा से भी सरलता से लग जाता है ।"

- कामायनी की कथा का प्रारंभ जल प्रलय की घटना से होती है जिसके कारण देव संस्कृति का विनाश हो जाता है ।
- इसी जल प्रलय की घटना के दौरान अनायास ही श्रद्धा और मनु का मिलन होता है ।
- दोनों मिलकर पुन : जीवन जीने का निर्णय करते हैं ।
- मनु के मन मे भोगवादी प्रवृत्ति प्रबल रूप से पनपती है
- इसी के परिणाम स्वरूप मनु श्रद्धा को गर्भावस्था के दौरान की छोड़कर चले जाते हैं ।

- सारस्वत प्रदेश में मनु की भेंट इड़ा से होती है ।
- मनु इड़ा के साथ सारस्वत प्रदेश में ही रहते हैं ।
- अपनी भोगवादी प्रवृत्ति के कारण वे इड़ा पर भी अपना आधिपत्य जमाना चाहते है किन्तु सफल नहीं हो पाते ।
- सारस्वत प्रदेश की प्रजा उनका विरोध करती है जिसके कारण युद्ध होता है और मनु उसमे घायल हो जाते है
- श्रद्धा मनु को खोजते हुए सारस्वत प्रदेश पहुँचती है और घायल हुए मनु को उठाती है ।
- श्रद्धा मनु का स्वास्थ्य ठीक होने तक उसकी देख रेख करती है ।
- श्रद्धा आपने पुत्र मानव को इड़ा के पास छोड़कर सभी के साथ मानसरोवर की यात्रा पर निकल जाती है ।

कामायनी का भाव पक्ष –

i. सौंदर्य निरूपण –

"उषा की पहिली लेखा कांत
अंस अवलंबित मुख के पास
नील धन शावक से सुकुमार
सुधा भरने को विधु के पास ।"

ii. मानवता वादी दृष्टिकोण -

"औरों को हँसते देखों मनु ,
हंसो और सुख पाओ
अपने सुख को विस्तृत कर लो ,
जग को सुखी बनाओ ।"

iv. **नारी की महत्ता -**

" नारी तुम केवल श्रद्धा हो
विश्वास रजत नग पग तल में
पीयूष –स्रोत –सी बहा करो
जीवन के सुंदर समतल में ।"

v. रहस्यवादी भावना –

"प्रवहमान थे निम्न देश में
शीतल शत –शत निर्झर ऐसे ,
महाश्वेत गजराज –गण्ड
बिखरीं मधु –धाराएँ जैसे" ।

v. नियतिवाद –

"निराधार है ,
किन्तु ठहरना हम दोनों को आज यही हैं।
नियति खेल देखूँ न
सुनो अब इस का अन्य उपाय नहीं है।"

vi. प्रकृति चित्रण –

स्वर्ण शालियों की कलमें थी
"दूर –दूर तकफैल रही ।
शरद इन्दिरा के मंदिर की
मानो कोई गैल रही ।"

vii. नारी का अमांसल सौंदर्य -

कामायनी का कला पक्ष –

- भाषा – खड़ी बोली का प्रयोग
- लोकोक्तियों एवं मुहावरों का प्रयोग
- अलंकार – उपमा, दृष्टांत, विरोधाभास, मानवीकरण, अनुप्रास
- छन्द- घनाक्षरी, ताटंक, रोला
- शैली

निष्कर्ष –

- कामायनी की कथा ऐतिहासिक, पौराणिक ग्रन्थों से ली गई है ।
- जिसे 15 सर्गों में बुना गया है ।
- कामायनी में श्रद्धा , मनु, इड़ा , मानव आदि बहुत थोड़े पात्र रखे गए हैं ।
- कामायनी में छायावादी काव्य की अधिकांश प्रवृत्तियां मिल जाती है ।
- इसलिए यह हिन्दी का महान महाकाव्य कहलाता है ।
- प्रसाद ने कामायनी में नवीन जीवन दर्शन , मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, परिवर्तित परिस्थितियों का समावेश किया है ।

संदर्भ –

- विकिपीडिया
- छायावाद, नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।
- कामायनी की भूमिका, जय शंकर प्रसाद , राजपाल एंड संस, दिल्ली

धन्यवाद